19-10-67

प्रातः क्लास   पिताश्री   ओमशान्ति   19-10-67

ओमशान्ति। मीठे2 रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बाप बैठ समझाते हैं। तुम सभी पहले आत्मा हो। यह पक्का निश्चय रखना है। बच्चे जानते हैं हम आत्माएं परमधाम से आती हैं। यहाँ शरीर लेकर पार्ट बजाती हैं। मनुष्य फिर समझते हैं हम शरीर ही पार्ट बजाते हैं। यह है बड़ी ते बड़ी भूल। जिस कारण आत्मा को कोई नहीं जानते। इस आवागमन में हम आत्मा आती-जाती हैं। इस बात को भूल जाते हैं इसलिए बाप को आकर आत्माभिमानी बनाना पड़ता है। यह बात भी कोई नहीं जानते। बाप ही बैठ समझाते हैं आत्मा कैसे पार्ट बजाती है। आत्मा में सारा पार्ट भरा हुआ है। मनुष्यों को मैक्सीमम 84 जन्मों से लेकर मिनिमम है एक दो जन्म। आत्मा को तो पुनर्जन्म लेते ही रहना है। इस से सिद्ध होता है बहुत जन्म लेने वाला बहुत पुनर्जन्म लेते हैं। थोड़े जन्म लेने वाले पुनर्जन्म थोड़े ही लेते हैं। जैसे नाटक में कोई का शुरू से लेकर पिछाड़ी तक पार्ट होता है। यह कोई मनुष्य नहीं जानते। मनुष्य अपनी आत्मा को ही नहीं जानते। आत्मा अपने को ही नहीं जानती तो अपने बाप को फिर कैसे जाने। आत्मा की बात है ना। बाप है ही आत्मा का। कृष्ण तो आत्माओं का बाप है नहीं। कृष्ण को निराकार तो नहीं कहेंगे। साकार में ही उनको पहचाना जाता है। आत्मा तो सब को है। हर एक आत्मा में पार्ट नूंधा हुआ है। यह बातें तुम्हारे में नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार ही समझ सकते हैं। अब तुम बच्चों ने समझा है हम आत्मा 84 जन्म कैसे लेती हैं। ऐसे नहीं कि आत्मा सो परमात्मा। नहीं। बाप ने समझाया है हम आत्मा पहले2 देवताएं बनती हैं। अभी पतित, तमोप्रधान हैं। फिर सतोप्रधान पावन बनना है। बाप आते ही हैं तब जब सृष्टि पुरानी हो जाती है। बाप आये पुराने को नया बनाते हैं। नई सृष्टि स्थापन करते हैं। नई दुनिया में है ही आदी सनातन देवी देवता धर्म। उन्हों लिए कहेंगे पहले कलियुगी शूद्र धर्म वाले थे। तुम सो आत्मा शरीर सहित.. क्योंकि आत्मा का तो धर्म नहीं बोलता है। धर्म बदलता [illegible] तुम [illegible] हो। तुम [illegible] पिता ब्रह्मा के मुखवंशावली बन तुम सो ब्राह्मण बने हो। ब्राह्मण कुल में आते हो। ब्राह्मण कुल को डिनायस्टी नहीं होती है। ब्राह्मण कुल कोई राजाई नहीं करते। इस समय भारत में न ब्राह्मण कुल राजाई करते हैं, न शूद्र कुल राजाई करते हैं। न ईश्वरी कुल राजाई करते हैं। न आसुरी कुल राजाई करते हैं। दोनो को रजाई नहीं है। फिर भी उनका प्रजा का प्रजा पर राज्य तो चलता है। तुम ब्राह्मणों को कोई [illegible] नहीं है। तुम स्टुडेन्ट बन पढ़ते हो। बाप तुमको ही समझाते हैं यह 84 का चक्र कैसे फिरता है। सतयुग त्रेता, द्वापर कलियुग। फिर होता है संगम युग। इस संगम युग जैसी महिमा और को की नहीं। यह है पुरुषोत्तम संगम युग। सतयुग से त्रेता में आते हैं तो 2 कला कम होती हैं। तो उनकी महिमा क्या करेंगे। गिरने की महिमा थोड़े ही होती है। कलियुग को कहा जाता है पुरानी दुनिया। अब नई दुनिया स्थापन होनी है। जहाँ देवी देवताओं का राज्य होता है। वह पुरुषोत्तम थे। फिर कला कम होते2 कनिष्ट शूद्र बुद्धि बन जाते हैं। उनको पत्थर बुद्धि भी कहा जाता है। ऐसे पत्थर बुद्धि बन जाते हैं जो [illegible] बाप समझ पूजा करते हैं। उनकी जीवन को बिलकुल ही जानते नहीं। बच्चे बाप के जीवन को न जाने तो वर्सा कैसे मिले। अब तुम बच्चे बाप के जीवन को जानते हो। उनसे तुमको वर्सा मिल रहा है। बेहद के बाप को याद करते हो। तुम मात पिता... कहते हैं, तो जरूर बाप आया होगा तब तो सुख घनेरे दिये होंगे ना। बाप कहते हैं मैं अथाह [illegible] अथाह सुख तुम बच्चों को देते हैं। बच्चों की बुद्धि यह नालेज अच्छी रीत रहनी है। इसलिए तुम स्वदर्शन चक्रधारी बनते हो। तुमको अब ज्ञान का तीसरा नेत्र मिला है। तुम जानते हो हम सो देवता बनते हैं। अभी शूद्र से ब्राह्मण बने हैं। कलियुगी ब्राह्मण भी हैं तो सही ना। वह ब्राह्मण जानते नहीं हैं कि हमारा धर्म अथवा कुल कब स्थापन हुआ। क्योंकि वह है ही कुख वंशावली।

तुम अभी ग्रेडेस्ट प्रजापिता ब्रह्मा के सन्तान बने हो। और सभी से ऊंच कोटि के हो। बाप बैठ तुम की सर्विस, सम्भालने की सर्विस, सिंगारने की सर्विस करते हैं। तुम भी हो आन गाडली सर्विस।

गाड पादर भी कहते हैं हम आये हैं सब बच्चों की सर्विस में। बच्चों को सुख का रास्ता बताना
बाप कहते हैं अब चलो घर। मनुष्य भक्ति भी करते हैं मुक्ति के लिए। जरूर यह जीवन बंध है। बाप इनके
दुःख से छुड़ाते हैं। तुम बच्चे जानते हो त्राह, त्राह करेंगे। हाहाकार बाद फिर जयजयकार होना है। अब तुम
बच्चों की बुधि में है कितनी हाय हाय करेंगे। जब नेचरल कलैमिटिज आद आवेंगी। युरप वासी यादव भी
हैं। बाप ने समझाया है युरोपवासियों को यादव कहा जाता है। इण्डिया से बाहर कहाँ भी जाओ तो
युरोप होंगा। अभी तुम जानते हो भगवद् आद शास्त्रों में कितनी गपोड़े बैठ लिखी हैं। गुड़ियों की जैसे खेल
हैं। पेट से मुसल निकली फिर सराप दिया.... अब सराप आद की तो बात ही नहीं। यह तो ड्रामा है।
बाप वर्सा देते हैं रावण सराप देती है। यह एक खेल बना हुआ है। बाकि सराप देने वाले तो दूसरे मनुष्य
होते हैं। उस सराप को उतारने वाले भी होते हैं। बाकि गुरुगोंसाई आद से मनुष्य लोग डरते हैं कि कोई
सराप न देवे। वास्तव में ज्ञान मार्ग में सराप कोई दे नहीं सकते। ज्ञान मार्ग वा भक्ति मार्ग में सराप की बात
नहीं। सराप देने वाले शैतान होते हैं। जो रीधी-सिधी आद सिखते हैं। दुःख बहुत देते हैं। पैसे भी बहुत कमाते
हैं। भक्त लोग यह काम नहीं करते। बाबा ने यह भी समझाया है संगम के साथ पुरुषोतम अक्षर जरूर
लिखो। त्रिमूर्ति अक्षर भी जरूर लिखना है। और प्रजापिता अक्षर भी जरूर लिखना है। क्योंकि ब्रहमा नाम भी बहुतों
के हैं। प्रजापिता अक्षर लिखेंगे तो समझेंगे साकार में प्रजापिता ठहरा। सिर्फ ब्रहमा लिखने से सुक्ष्मवतन वाला
समझ लेते हैं। ब्रहमा, विष्णु, शंकर को भगवान कह देते। प्रजापिता कहेंगे तो समझा सकते हो प्रजापिता
तो यहाँ है। सूक्ष्मवतन में कैसे हो सकता। ब्रहमा और विष्णु को तो दिखाते हैं नाभी से निकला। तुम बच्चों को
अभी ज्ञान मिला है नाभी आद की कोई बात नहीं। ब्रहमा सो विष्णु विष्णु सो ब्रहमा कैसे बनते हैं
सारा चक्र का ज्ञान तुम इन चित्रों पर समझा सकते हो। समझाने में मेहनत लगती है। फिराये-घुराये
तुम समझा सकते हो। अच्छा शंकर भला किसके नाभी से निकला। बच्चों को यह समझाया है शंकर का
कोई पार्ट ही नहीं। यह तो सृष्टि का चक्र फिरता ही रहता है। ब्रहमा सो विष्णु, विष्णु सो ब्रह्मा बनते
हैं। लक्ष्मी-नारायण 84 का चक्र खायें फिर एडाप्टेड ब्रहमा-सरस्वती बनते हैं। क्योंकि सन्यास करते हैं
ना। बाबा ने पहले से ही नाम दे दिये हैं। जब भठी बनी तो नाम दिये। फिर कितने चले गये। समझाया है ब्राहमणों की माला होती नहीं। क्योंकि ब्राहमण हैं पुरुषार्थी। कब उपर कब नीचे होते रहते
ब्रहमचारी बैठती है। बाबा तो जवाहरी था मोतियों आद की माला कैसे बनती है अनुभवी है। ब्राहमणों की
माला पिछाड़ी में बनती है। समझाना चाहिए जो रुद्र माला सो ब्राहमणों की अंत की माला है। रुद्र माला
सो फिर रुंड माला विष्णु की माला बनती है। अंत में ब्राहमणों की रुद्र माला। रुद्र माला
रुंड माला मशहुर है। रुद्र माला सो रुंड माला, रुंड माला सो रुद्र माला। यह बुधि में याद रहना चाहिए।
हम सो ब्राहमण फिर देवता बनते हैं। फिर सीढ़ी उतरनी है। नहीं तो 84 जन्म कैसे लेंगे। 84 जन्मों की हि
से यह निकाल सकते हैं कैसे2 फिर कम जन्म होते जाते हैं। तुम्हारा आधा समय पुरा होता है तो फि
दूसरे धर्म वाले ऐड होते हैं। माला बनाने में बड़ी मेहनत लगती है। बड़ी सम्भाल से मोतियों को टेक
रखा जाता है।, कहाँ ठीक न बनी तो माला तोड़ना पड़ें। यह तो बहुत बड़ी माला है। तुम बच्चे
जानते हो हम पढ़ते हैं नई दुनिया के लिए। बाबा ने रात्री को भी कहा सलोगन्स बनाओ। हम शुद्र से
ब्राहमण से देवता, फिर देवता से क्षत्री.... कैसे बनते हैं। आकर समझो। इस चक्र को जानने से तुम चक्रव
बनेंगे। स्वर्ग का मालिक बन जावेंगे। ऐसे2 सलोगन बनाके बच्चों को सिखलाना चाहिए। बाबा युक्तियाँ
बहुत बताते हैं। 84 जन्मों का भी समझाया है। मैक्सीमम देवताओं के ही 84 जन्म हैं। फिर कम होत
वैल्यु तुम्हारी है। तुमको हीरो-हीरोईन का पार्ट मिलता है। हीरे जैसा तुम बनते है
है। ला चक्र लगाये कोड़ी मिसल बनते हो। अब जब कि हीरे जैसा जन्म मिलता है
रहे पर

तो कौड़ियों पिछाड़ी क्यों पड़ते हो। ऐसे भी नहीं कोई घर-बार छोड़ना है। बाबा तो कहते हैं गृहस्थ व्यवहार में रहते कमल फूल समान पवित्र रहो। और सृष्टि चक्र के नालेज को जान कर देवी गुण भी धारण कर करो तो तुम हीरे जैसा बन जावेंगे। क्योंकि भारत 5000 वर्ष पहले हीरे जैसा था। यह है एम आबजेक्ट। (ल०ना०) इस चित्र को बहुत महत्व देना है। तुम बच्चों को बहुत सर्विस करनी है प्रदर्शनी, म्युजियम पर। विहंग मार्ग की सर्विस बिगर तुम प्रजा कैसे बनावेंगे। भल इस ज्ञान को सुनते भी हैं परन्तु ऊंच पद कोई विरले ही पाते हैं। उनके लिए ही कहा जाता है कोटों में कोउ। स्कालरसिप भी कोई लेते हैं ना। 40-50 बालक स्कूल में होते हैं तो उन में से कोइ एक स्कालरसिप लेता है। कोई थोड़ा पायस में आ जाते हैं तो उनको भी दे देते हैं। पायस में तो बहुत हैं। आठ दाने हैं सो भी नम्बरवार हैं। पहले 2 राजगद्दी पर बैठेगे फिर कला कम होती जावेगी। ल०ना० का चित्र है नम्बरवन। इनकी भी डिनायस्टी चलती है। परन्तु चित्र इन ल०ना० का ही दिया होता है। यहां तुम जानते हो चित्र भी बदलते रहते हैं। चित्र देने से क्या पार्टधारी नाम रूप देश काल सब बदल जाता है। मीठे 2 ज्ञानी बच्चों को ज्ञानी बाप बैठ समझाते हैं। कल्प पहले भी बाप ने समझाया था। ऐसे नहीं कि कृष्ण ने गोप-गोपियों को सुनाया। न कृष्ण के गोप-गोपियां होते हैं। न कृष्ण को ज्ञान सिखाया जाता है। वह तो है सतयुग का प्रिन्स। वहां कैसे राजयोग सिखावेंगे। पतित को पावन बनावेंगे। यह भी बड़ी मूर्खता है। जो कृष्ण का नाम दे दिया है। अब तुम अपने बाप को याद करो। बाप फिर टीचर भी है। टीचर को कब स्टुडेन्ट कब भूल न सके। बाप को बच्चे भूल न सके। गुरु को भी भूल न सके। बाप तो जन्म से ही होता है। टीचर 5 का बाद मिलता है। फिर गुरु वानप्रस्थ में मिलता है। जन्म से ही कोई गुरु करने का कायदा नहीं है। गुरु का गोद लेकर भी फिर दूसरे दिन मर जाते हैं। फिर गुरु क्या करते हैं। गाते भी हैं सदगुरु बिना गत नहीं। सदगुरु को छोड़ वह फिर गुरु कह देते। गुरु तो ढेर हैं। सर्व का सदगति दाता एक ही सदगुरु है। दूसरे सब गुरु हैं। बाबा कहते रहते हैं मांगने से मरना भला। सब को चिन्ता रहती है हम अपने पैसे कैसे ट्रांसफर करें दूसरे जन्म लिए। वह ईश्वर अर्थ दान-पुण्य करते हैं। तो उसका रिटर्न इस ही पुरानी सृष्टि में मिलता है अल्प काल लिए। यहां तुम्हारा ट्रांसफर होता है नई दुनिया 21 जन्मों लिए। तन मन धन प्रभु के आगे अर्पण करना है। सो तो जब आवेंगे तब करेंगे। प्रभु को कोइ जानते ही नहीं। तो गुरु को पकड़ लेते हैं। धन आदि गुरु को अर्पण करते करते हैं। वारस नहीं होता है तो सब गुरु को ठोक देते हैं। आजकल कायदे अनुसार ईश्वर को भी कोई देते नहीं हैं। सन्यासी आदि देखो करोड़पति बन गये हैं। इसको कोई दान करना है क्या। बाप समझाते हैं बाप बहुत गरीब है। इसलिए मैं आता ही भारत में हूं। तुमको आकर विश्व का मालिक बनाता हूं। डैविल और इन डैविल में कितना फर्क है। वह जानते कुछ भी नहीं सिर्फ कह देते हैं हम ईश्वर अर्पण करते हैं। है सबबे समझ। तुम बच्चों को अब समझ मिलती है। तो तुम बेसमझ से समझदार बनते हो। बुद्धि में ज्ञान है, बाप तो कमाल करते हैं। जब बेहद के बाप से बेहद का वर्सा मिलना चाहिए। बाप से ही तुम वर्सा लेते हो दादा द्वारा। दादा भी उन से वर्सा ले रहे हैं। वर्सा देने वाला एक ही है। उनको ही याद करना है। ब्रह्मा का चित्र तो तुम रखो भी नहीं। कहते है बहुत जन्मों के अन्त में आता हूं तो जरूर पतित ही ठहरे ना। इन में प्रवेश कर इनको ही भी पावन बनाता हूं। जो फिर वह फरिश्ता बन जाते हैं। बच्चों के लिए सालीगन बनाना है। बहुत अच्छी लिस्ट तैयार करो। तुम बहुत काम कर सकते हो। यह बैज आदि तुम बहुत निकाल कर सकते हो। यह चीज कब किसको मिल न सके। तुम्हारा यह सब है अर्थ सहित। वे लाखों विक सकती हैं। खर्चा निकल आवेगा। यह तो जीते दान देने वाले चीज है। इनके वैल्यु का भी पता नहीं है। और बाबा को हमेशा बड़ी चीज पसन्द आती है। जो कोई भी दूर दूर तक के चित्र भी तुमको मिल जावेंगे। अच्छा मीठे 2 बच्चों को गुड मार्निंग और नमस्ते।